{रस}

कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों हेतु।
UP BOARD CBSE BAORD ALL COMPETITION

रस की परिभाषा:—

आचार्य भरतमुनि के अनुसार —

"विभावानुभाव व्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पात्तिः"

विभाव, अनुभाव एवं व्याभिचारी (संचारी) भावों के संयोग से रस की निष्पात्ति होती है।

रस के अंग

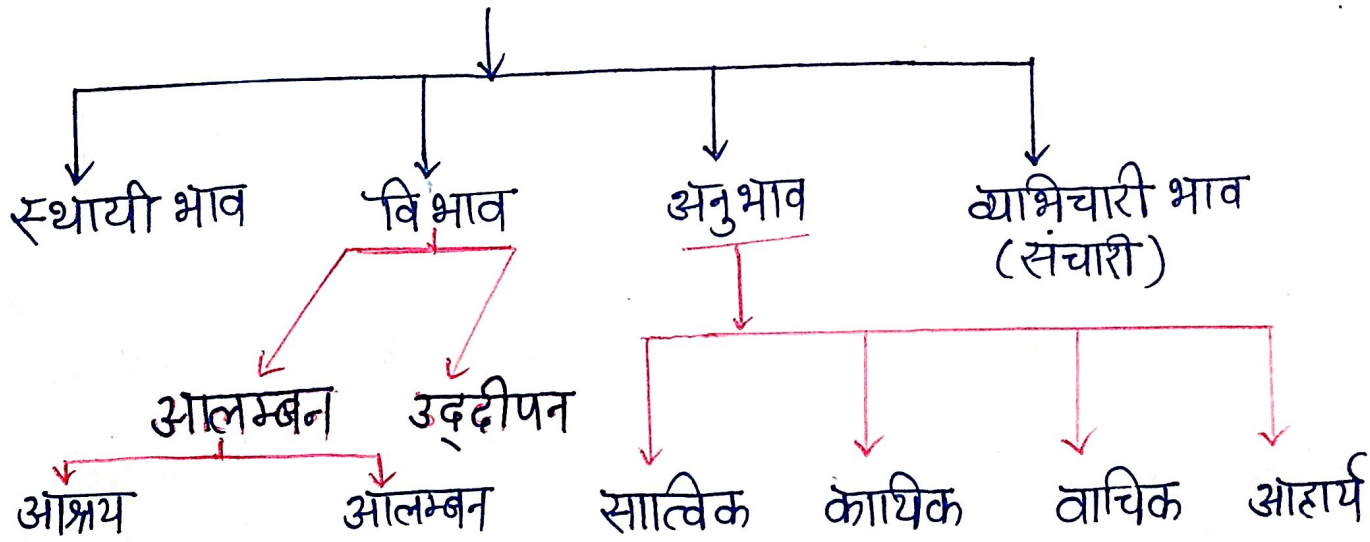

स्थायी भाव :— दुःख, क्रोध, उत्साह, आश्चर्य, प्रेम आदि भाव जो मनुष्य के हृदय में स्थायी रूप से विद्यमान रहते हैं।

विभाव :–
स्थायी भाव के कारण विभाव कहलाते हैं।

(i) आलम्बन विभाव –
जिनकी वजह या सहारे से स्थायी भाव जाग्रत होते हैं।

(A) आश्रय – जिनके हृदय में स्थायी भाव जागें, वो व्यक्ति।

(B) विषय – जिसकी वजह से स्थायी भाव जागे, वो व्यक्ति।

(ii) उद्दीपन विभाव :–
स्थायी भावों को और तीव्र करने वाले बाह्य कारण या वातावरण।

अनुभाव :– अनु + भाव → भाव-स्थायी भाव
↓
पीछे/बाद

अर्थात् स्थायी भाव के बाद उत्पन्न होने वाले भाव।

(i) सात्विक – स्वत: प्रकट होने वाले भाव।

(ii) कायिक – शरीर से सम्बन्धित।

(iii) वाचिक – बातचीत से प्रकट होने वाले अनुभाव

(iv) आहार्य – वेशभूषा द्वारा भाव प्रदर्शन

संचारी या व्यभिचारी भाव

मन के चंचल या अस्थिर विकारों को संचारी भाव कहते हैं। स्थायी भाव के बदलने पर ये भाव परिवर्तित होते रहते हैं, इनका नाम 'संचारी भाव' रखे जाने के पीछे यही कारण भी है। संचारी भावों को व्यभिचारी भाव भी कहा जाता है। *उदाहरण के लिए*—शकुंतला के प्रति रति भाव के कारण उसे देखकर दुष्यंत के मन में मोह, हर्ष, आवेग आदि जो भाव उत्पन्न होंगे, उन्हें संचारी भाव कहेंगे।

संचारी भावों की संख्या तैंतीस (33) बताई गई है। इनमें से मुख्य संचारी भाव हैं—शंका, निद्रा, मद, आलस्य, दीनता, चिंता, मोह, स्मृति, धैर्य, लज्जा, चपलता, आवेग, हर्ष, गर्व, विषाद, उत्सुकता, उग्रता, त्रास आदि।

रस	स्थायी भाव	संचारी भाव
शृंगार	रति	स्मृति, हर्ष, मोह आदि
हास्य	हास	हर्ष, चपलता, लज्जा आदि
करुण	शोक	ग्लानि, शंका, चिंता आदि
रौद्र	क्रोध	उग्रता, क्रोध आदि
वीर	उत्साह	आवेग, गर्व आदि
भयानक	भय	डर, शंका, चिंता आदि
बीभत्स	जुगुप्सा (घृणा)	दीनता, निर्वेद, घृणा आदि
अद्‌भुत	विस्मय	हर्ष, स्मृति, घृणा आदि
शांत	निर्वेद (वैराग्य)	हर्ष, प्रसन्नता, विस्मय आदि
वात्सल्य	वत्सल	वत्सलता, हर्ष आदि
भक्ति	अनुराग/ईश्वर विषयक रति	हर्ष, गर्व, निर्वेद, औत्सुक्य आदि

रसों के भेद

रस के मुख्यत: नौ भेद होते हैं।
बाद में दो और स्थायी भावों को विद्वानों
ने मान्यता देकर रसों की संख्या ११ बतायी।

शृंगार रस

परिभाषा :- जब 'रति' नामक स्थायी भाव विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी भावों द्वारा पुष्ट होता है तब शृंगार रस की निष्पत्ति होती है —

दो भेद माने गये हैं —

(1.) संयोग शृंगार

(2) विप्रलम्भ (वियोग शृंगार)

संयोग शृंगार —

जहाँ पर नायक नायिका का मिलन होता है। वहाँ संयोग शृंगार होता है।

Ex. "बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै भौंहनि हँसै, दैन कहै नटि जाय॥"

स्थायी भाव— रति
आश्रय — नायक
आलम्बन — नायिका
उद्दीपन — नायिका की चेष्टाएँ – मुस्कान, हाव भाव, बंकिम दृष्टि।
अनुभाव — कटाक्ष, आलिंगन, चुम्बन
संचारी भाव — लज्जा, हर्ष, चपलता

विप्रलम्भ / वियोग शृंगार —

जहाँ पर नायक-नायिका के वियोग का वर्णन हो, वहाँ वियोग शृंगार रस होता है।

Ex - हे! खग, मृग! हे! मधुकर स्रेनी!
तुम देखी सीता मृगनैनी॥

स्थायी भाव — रति
आश्रय — सीता
आलम्बन — सीता
उद्दीपन — नायक राम की चेष्टाएँ — विलाप, रुदन।
अनुभाव — स्तंभ, स्वेद, स्वरभंग
संचारी भाव — विषाद, मोह, दीनता।

उदाहरण "दूलह श्रीरघुनाथ बने दुलही सिय सुन्दरी मन्दिर माहीं।
गावति गीत सबै मिलि सुन्दरि बेद जुवा जुरि बिप्र पढ़ाहीं।।
राम को रूप निहारति जानकि कंकन के नग की परछाहीं।
यातें सबै सुधि भूलि गई कर टेकि रही, पल टारत नाहीं।।"

कौन हो तुम वसंत के दूत
विरस पतझड़ में अति सुकुमार;
घन तिमिर में चपला की रेख
तपन में शीतल मंद बयार!

मे : प्यारे नव जलद से कंज से नेत्रवाले।
जाके आये न मधुबन से औ न भेजा संदेशा।
मैं रो रो के प्रिय-विरह से बावली हो रही हूँ।
जा के मेरी सब दुख-कथा श्याम को तू सुना दे॥